

शिरवरिणी

लक्षणः —

रेसे
६ रुक्षैश्चिद्धना यमनस अव्यगः शिरवरिणी ।

अथः —

इस शिरवरिणी छन्द के प्रत्येक वर्ण में यमन, मगाण, नगाण, सगाण, अगाण, लुक लघु और एक शुभ होते हैं तथा कुल वर्णों न होते हैं पाद के ६ वर्णों तथा अन्तिम ॥१७ वर्ण पर थाति होती हैं

3410 —

अनाद्यात् पुर्वं किसलयमवृत्तं करत्वैः —
 ॥ ११५ ॥ ११५ ॥ ११५ ॥ ११५ ॥ ११५ ॥ ११५ ॥
 १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३०
 रना॒वृद्धि॑ र॒ले॑ म॒वृन्व॒मना॑ स॒वृद्धित्॒र॒सम्॑
 १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३०

अरवृद्धं पुर्यानां पूर्वाग्निं च तद्वप्यनव्यं
 १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३०
 १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३०

न जाने भौतिकाद् कर्मिष्ठै सम्पृष्ट्याऽस्याति विद्येः ॥
 १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३०
 १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३० १४३०

लक्षणः अनाना नानाना, ननन ननना ननन, नना

तीर्थ यात्रा की कथावलु

प्रदेशकार्यक्रम के दूसरी छंटा का नाम 'वार्षिक-दृष्टि' ही
सर्वोन्नति का अर्थ होता है जिसका उपर्युक्त वीरुत्तमा। //
इस छंटा में आविष्कृत वार्षिक वृत्ति यह है कि भौतिक
वीरुत्तमा है उद्योगिता वृत्ति वार्षिक वृत्ति वार्षिक वृत्ति।

- जा की दाली 'प्रदेशकार्यक्रम' की वाला वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर
वार्षिक वृत्ति के बाहर ही वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर
उद्योगिता वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर ही वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर
'वृत्ति' अपनी गति को वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर ही वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर
आवृत्तियों के बाहर 'वृत्ति' वीरुत्तमा वृत्ति है जिसे वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर
सेकर विद्युत्प्रकृति वृत्तियों की ही वीरुत्तमा वृत्ति है।

दूसरी छंटा के प्रथम छंटा में वार्षिक वृत्ति का वीरुत्तमा
प्रथम पर आया है। महावरात्रि का वीरुत्तमा है। वार्षिक वृत्ति
नहीं लौटी है। अब वीरुत्तमा वृत्ति का वीरुत्तमा है।
द्वितीय छंटा में वार्षिक वृत्ति और वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर वीरुत्तमा
वृत्तियों के बाहर वीरुत्तमा है। दूसरी वीरुत्तमा वृत्ति ही वीरुत्तमा वृत्ति
तीर्थ वृत्ति वीरुत्तमा है। दूसरी वीरुत्तमा वृत्ति की वीरुत्तमा वृत्ति
वीरुत्तमा वृत्ति ही वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर ही वीरुत्तमा वृत्ति
द्वारा वीरुत्तमा वृत्ति की वीरुत्तमा वृत्ति ही वीरुत्तमा वृत्ति
हाथ में लिए द्वारा सीधा उत्तमा है और विंग में वह वृत्ति
रहा है। वह वृत्ति विंग में वीरुत्तमा वृत्ति की वार्षिक वृत्ति
कहा है कि वह आवृत्तियों आज ही वीरुत्तमा वृत्ति के बाहर ही
वह मुम्भये वीरुत्तमा वृत्ति की वार्षिक वृत्ति की वार्षिक वृत्ति
उद्योगिता वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति है।

- वीरुत्तमा वृत्ति में वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति।
वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति। वीरुत्तमा वृत्ति की वार्षिक वृत्ति।
वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति। वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति।
वीरुत्तमा वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति। वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति।
वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति। वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति।

वीरुत्तमा वृत्ति वीरुत्तमा वृत्ति।

मुख्यालय

Name - Soni Kumar
Class - 8th year
Subject - Sanskrit

त्रिवेदी अंक की व्याख्या

मुख्यालय की पूर्णता का नाम 'शात्रिष्ठ' है।
शात्रिष्ठ का अर्थ होता है शिराभास्त्रा अवाति विद्युत् एव। ॥
इस अंक के शिराभास्त्रा के बारे में शिराभास्त्रा
लोकों द्वारा ही उदाहित गया है। इसका नाम 'शात्रिष्ठ' भाव का।

- यह अंक की शिरी 'शात्रिष्ठ' की व्याख्या है। शुभित द्वितीय विद्युत
वापरकर्ता के घर में शिरो लगाकर उपस्थिता की रुचि है।
आनुष्ठानी की शुभाकृति जीवा है। वापरकर्ता की प्रथा
'शूता' आपने पति को लोकापवाह से बचाने के द्वारा
आनुष्ठानी के लिये 'शोभाला' द्वारा ही लिये गए
शुभाकृति विद्युत्संवर्तीना की है जैसा है।

त्रिवेदी अंक के प्रधान दृश्य में वापरकर्ता का घर
अंतर एव आगा है। गहराई का रामण है। घर बाहर घर
नहीं लौटे हैं। अतः द्वितीय विद्युत्संवर्तीना कहा है।

द्वितीय दृश्य ये हैं - वापरकर्ता द्वारा शिरो द्वितीय विद्युत के घर दी दृश्य
शुभाकृति द्वारा है। द्वितीय विद्युत की दृश्यांसा करते हैं और वही जांचते हैं।
त्रिवेदी दृश्य में शात्रिष्ठक वसतिशीरा की दृश्यी गद्धिनी को
शुभाभी द्वीप छुड़ाने के लिए वापरकर्ता के घर में दीर्घा लगाया
गया है। लौटी करने जाता है जोहों विद्युत्संवर्तीना का वापरकर्ता
घाय में लिए उए रोशा दुआ है और निः गें वह वापरकर्ता
रहा है। वह द्वितीय विद्युत में शात्रिष्ठक हो। वापरकर्ता रामण
कहता है कि वह आनुष्ठान आप ही द्वितीय दृश्य के कानों की
वापर युक्त नहीं होनी चाहती। शात्रिष्ठक इस मौके का आवक
उपाकृति जानी लोकर जाता जाता है।

- द्वितीय दृश्य में द्वितीय विद्युत की दृश्यांसा है। वापरकर्ता
द्वारा विद्युत्संवर्तीना की दृश्यांसा है। द्वितीय विद्युत
द्वीप विद्युत्संवर्तीना के घर नहीं लौटा है। वापरकर्ता
प्रतिशता जारी शूता विपति की कानों से लागी है। विद्युत
आपना उक्तग्राम वापरकर्ता रहनार लौटा है जोहों उपर लोक विद्युत्सं
वर्तीना के घर प्रवृत्त रहना है।

त्रिवेदी अंक की समाप्ति